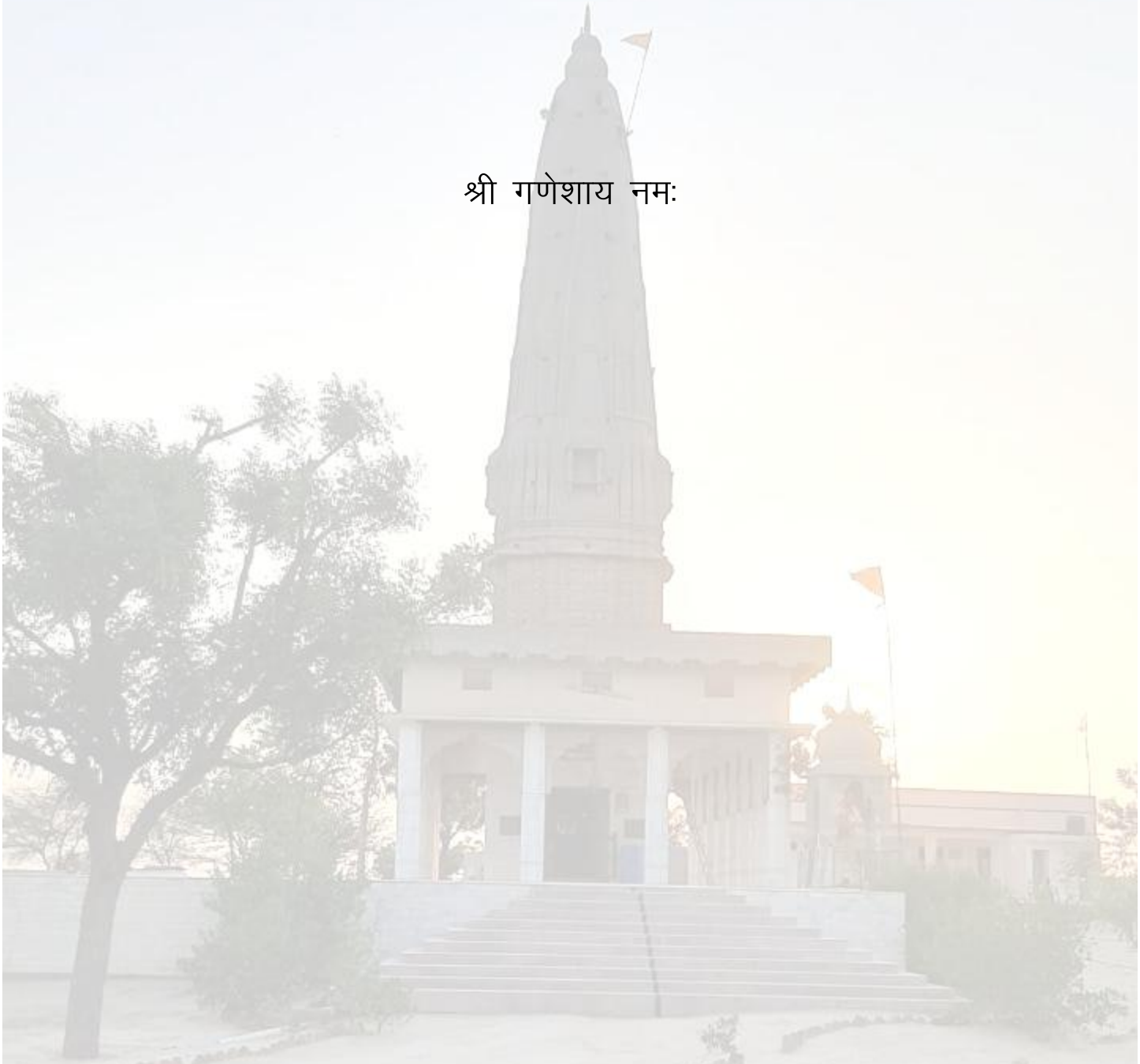

श्री गणेशाय नमः

श्री श्री 1008 श्री गुमानीराम जी दादोजी महाराज

मैणासर धाम

(जीवनी व पर्चे)
भाग – द्वितीय

सर्वप्रथम मैं दानाराम खीचड़ भगवान श्री गणेश जी को नमन करते हुए व श्री श्री 1008 ब्रहमनिष्ठ योगीराज संत श्री गुमानीराम जी (दादोजी) महाराज का ध्यान करते हुए आप मेरी लेखनी पर विराजमान होकर सत्यता का प्रतीक बनें। मैं आपके जीवन की जीवनी व कुछ पर्चो का भाग – द्वितीय, मेरी लेखनी द्वारा लिख रहा हुॅ। अतः आप कुछ गलती हो तो क्षमा कर देना। सभी भक्तगणों से मेरी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि तुच्छ मात्रा त्रुटि पर ध्यान मत देना।

1. श्री श्री 1008 ब्रहमनिष्ठ योगीराज संत श्री गुमानीराम जी (दादोजी) महाराज बारह वर्ष की अल्प आयु में 12 वर्ष तक अपने गुरू मिलतारूराम व दत्तात्रेय भगवान के सानिघ्य में अपनी शिक्षा – दीक्षा लेकर उनसे आशिर्वाद लेकर उनके आदेशानुसार अपने गांव मैणासर अपने घर लौटने के बाद कुछ वक्त बीत जाने के बाद एक दिन रावणा – राजपूत डूंगरजी ने जो भाई की तरह 12 वर्ष पूर्व एक साथ ग्वाली करते थे। उन्होंने अपने शीतल व भोलेपन स्वभाव से मुस्कराते हुए पूछा कि भैया – इतने दिन कहां रहें। क्या खाया, क्या किया व क्या सिखा, मुझे भी कुछ बताने की कृपा करें।

तब मुस्कराते हुए श्री गुमानीराम जी महाराज ने कहा – कि मित्र जब आपने मेरे साथ जाने से इंकार कर दिया तो अब पूछने से क्या प्रायोजन है। लेकिन मित्रता तो मित्रता होती है, जिसके आगे मित्र को झुकना पड़ा। डूंगर जी ने बोला कि ज्यादा नहीं बताओं तो कोई छोटा सा मंत्र जरूर सिखलादो। तब श्री गुमानीराम जी ने कहा कि भैया मंत्र सिद्धि करना बहुत मुश्किल है। आपके बस की बात नहीं है। पर वह माना नहीं। बोला कि सारे मंत्र आपके सिद्ध किये हुये है। मुझे छोटा सा उनमें से ही बतलादो। श्री गुमानीराम जी महाराज ने दो शब्दों का एक छोटा सा मत्र अपने मित्र को बता दिया। पुराने जमाने में संयुक्त परिवार होते थे। शाम के समय हर परिवार में मोठ – बाजरा की खीचड़ी बनाई जाती थी। डूंगर जी की मॉ ने भी मोठ – बाजरा मिलाकर चुल्हे पर खीचड़ी चढ़ा दी। डूंगर जी मॉ के पास पहुंचा और उस खीचड़ी को बनती देखकर धीरे से अपना मंत्र बोल कर बाहर आकर बैठ गया। उनकी मॉ ने बहुत सारी लकड़ीयाँ जला दी पर खीचड़ी में पानी अलग व मोठ – बाजरा अलग ही दिख रहे थे। खीचड़ी नहीं बन रही थी। डूंगर जी की मॉ तंग आ गई। घर में बच्चे भूख से रोने लग गये। तब डूंगरजी की मॉ के दिमाग में आया कि जरूर आज कुछ गड़बड़ है। बेटे डूंगरजी को बुलाया और पुछा कि बेटा खीचड़ी नहीं पक्क रही है। तब डूंगर जी हंसता हुआ बाहर भाग गया। तब मॉ वहां से उठी और श्री गुमानीराम जी महाराज से आकर बोली कि बेटा खीचड़ी नहीं पक्क रही है। डूंगर को कुछ सीखा तो नहीं दिया।

तब श्री गुमानीराम जी महाराज ने कहा मॉ आप चलो में आ रहा हूँ। श्री गुमानीराम जी महाराज ने डूंगर जी अपने मित्र को बुलाया और बोला कि मैनें जो तुम्हें मंत्र बतलाया था उसकों तुमने याद किया या नहीं मुझे एक बार बोलकर बतलाओं। डूंगर जी समझा नहीं उन्होंने अपना मंत्र बोलना शुरू कर दिया। ज्यों ही उन्होंने मंत्र बोला। श्री गुमानीराम जी ने अपनी आध्यात्मिक शक्ति से उस मंत्र की ताकत खत्म कर दी। तथा डूंगर जी को कह की अब खीचड़ी पक्क जायेगी।

अपने मित्र डूंगर जी को कहा मैं पता लगा रहा था कि अब तो शायद तेरे को सीखने की लग्न जागृत होगी। पर आप तो 12 वर्ष पहले थे वैसे के वैसे ही हो। घर में मॉ के साथ ही खिलवाड़ कर लिया तो फिर दूसरों का क्या भला करोगें। जाओं काम करो पेट पालो, परिवार पालों। यह शक्तियाँ सीखने के लायक आप नहीं हो। इस प्रकार पहली विद्या अपने दोस्त को बताई। पर दोस्त उसकों नहीं जान सका। इसलिए भगवान की शक्ति का सदुपयोग हर इंसान नहीं कर सकता और वो धीरे – धीरे पाखण्ड के घेरे में चला जाता है।

2. श्री गुमानीराम जी महाराज 12 वर्ष गुरू के सानिध्य में रहकर विद्या प्राप्त करके अपने घर में गृहस्थ जीवन व्यतीत कर रहे थे। एक दिन घरवालों ने कहा जाओं अपने नोहरें (बाड़े) में से ऊंटों के लिए चारा लाओं। तब श्री गुमानीराम जी ऊंटों के लिए चारा लेने के लिए अपने नोहरे में गये, नोहरा (आज जहां पर सांवताराम पुत्र श्री पदमाराम खीचड़ निवास करता है।) वहां पर अचानक ग्राम मैणासर का रेंवतसिंह शेखावत की मौसी अपने – घरवालें यानी रेंवतसिंह का मौसा को ऊंट पर बेहोशी हालत में डालकर खेत से वहां पहुंची। खेत में रेंवतसिंह का मौसा – मौसी दोनों काम कर रहें थे। उनके कोई औलाद नहीं थी। बुढ़ापे में अपनी बहिन के लड़के कांरगा निवासी रेंवतसिंह को बाद में गोद लिया था। पहले दोनों अकेलें थे। अचानक गुराहा (गोहीरा) निकला और उनको खा गया खाते ही रेंवतसिह का मौसा बेहोश हो गये अकेली औरत ने ऊंठ पर बैठाकर कर श्री गुमानीराम जी के पास में लाई। श्री गुमानीराम जी ने उनको बेहोशी की हालत में देखकर पूछा क्या हुआ। रेंवतसिंह की मौसी ने रोते – बिलखते हुए आप बीति बताई।

श्री गुमानीराम जी ने ऊंट को बैठाकर गोद में लेकर उनको नीचे उतारा। और बोले बेटा अगर अब तक खत्म हो जाते तो मेरी कुछ नहीं चलती। मगर अब आप चिंता मत करों। अब कुछ नहीं बिगड़ सकता। श्री गुमानीराम जी महाराज अपने गुरू मिलतारूराम जी व भगवान दत्तात्रैय जी को याद करके अपने – मंत्र सिद्धि से तुरतं जहर को उत्तार दिया। जहर उतरते ही उनके सामने तुरंत रेंवतसिंह का मौसा ने आंखे खोल ली व सामने श्री गुमानीराम जी को बैठा देखकर भौ–चक्के रह गये। पूछा मेरे को क्या हो गया था। मैं खेत में काम कर रहा था।

यहां कैसे पहुंच गया। तब रेंवतसिंह की मौसी ने सारी आप – बीती बख्खान कर दी। ऐसा चमत्कार देखकर दोनों ने हाथ जोड़कर श्री गुमानीराम जी महाराज को नमन किया। व उनसे आशीर्वाद लेकर अपने घर आ गये व श्री गुमानीराम जी महाराज के बताये राम नाम के जाप से अपना जीवन व्यतीत किया।

3. एक समय की बात है– गांव मैणासर में एक जादुगर आया और गांव के मध्य में आम चौक (गुवाड़) में जहां पर ठाकुर जी महाराज का मंदिर है। वहां पर अपना पण्डाल बनाकर अपना हूनर जादुगीरी दिखाने लगा। गांव के बहुत सारे लोग – एकत्रित होकर उसका हुनर देखनें लगे। उसके पण्डाल से थोड़ी दुरी पर कम्बल ओढ़कर श्री गुमानीराम जी महाराज भी बैठ गये। जादुगर अपना चमत्कार दिखा रहा था। कभी पक्षी, कभी छोटे जानवर, कभी मुंह से आग का गोला निकाल रहा था। कभी कुछ अपना हुनर दिखा रहा था। अपना हुनर दिखाते – दिखाते उसकी नजर श्री गुमानीराम जी महाराज पर पड़ी। जादुगर ने सोचा वो बुजुर्ग आदमी दूर क्यों बैठा है। अपनी कला – हुनर जादुगीरी में मदहोश होकर वह जादुगर भी गुमानीराम जी महाराज के पास में गया और बोला बाबा यहां क्यों बैठे हो। मेरे पण्डाल के पास आओं, मैं आपको मयूर (मोर) या चिता बनाकर नचाउंगा। श्री गुमानीराम जी ने कहा आप अपना काम करो मैं आराम से बैठा हूँ। और भी मेरे गांव के छोटे – बड़े बहुत लोग खड़े है। आप उनको दिखाओं व मैं भी यहां से देख रहा हूँ। इसलिए आप चले जाओ।

लेकिन वो जादुगर, जादुगीरी में मदहोश नहीं माना। श्री गुमानीराम जी का हाथ पकड़कर घसीटने लगा और बोला मैं आपको ही इन सबके सामने मोर या चिता बनाकर नचाउंगा। श्री गुमानीराम जी ने कहा मैं यहां पर बैठा हूँ। तेरे को जो कुछ बनाना है। बना दें। जादुगर राजी हो गया। तथा अपनी मंत्र –तंत्र विद्या का प्रयोग करते हुये फुंक मारने लगा। श्री गुमानीराम जी महाराज चुप – चाप बैठे हुये एक टक उस जादुगर को देखते रहें । जादुगर को पसीना आ गया। पर हुआ कुछ नहीं।

जादुगर को गुस्सा आया और बोला – बाबा मेरी तंत्र – मंत्र विद्या तो नहीं चली। मगर बाबा आपकी हिम्मत हो तो मैं आपको खुला चैलेंज देता हुँ। आप मुझे कुछ बनाकर दिखाए। श्री गुमानीराम जी ने कहा – तुमने तुम्हारा पेट पालने का हुनर सीख रखा है। गांवो में जाकर लोगों को क्यों को क्यों परेशान करता है। अपना पेट पालनें का हुनर दिखाकर यहां से दुसरे गांव में चला जा। मगर वो जादुगीरी में मदहोश जादुगर नहीं माना। बोला – बाबा मुझे पता लग गया है कि आप कुछ जरूर जानते हो। मेरा तंत्र – मंत्र तो नहीं चला पर आपका भी मैं नहीं चलने दूंगा। इसलिए श्री गुमानीराम जी महाराज को तुच्छ – मात्र रोष आया। और खड़े होकर जादुगर की तरफ हाथ करके एक फुंक मारी और जादूगर धड़ाम से

जमीन पर गिर पड़ा। ऐसा देखकर सारे लोग वहां से भाग गये। और श्री गुमानीराम जी पास में ही अपना घर था, वहां चले गये और घर में जाकर बैठ गये। और थोड़ी देर बाद में गांव के ही किसी भाई ने श्री गुमानीराम जी के बड़े भाई अमराराम जी को उस घटना के बारे में विस्तार से बता दिया । श्री अमराराम जी जहां जादुगर का पण्डाल था, वहां पहुंच गये। वहां जाकर देखा तो जादुगर जमीन पर पड़ा तड़फ रहा था। और साथ ही खुन भी बह रहा था। श्री अमराराम जी को उस जादुगर पर दया भी आई और अपने छोटे भाई पर गुस्सा भी आया। और सोचा गुमानीराम जी ने बहुत बड़ा अन्याय कर दिया। वहां से वापिस मुड़कर अमराराम जी घर आए और श्री गुमानीराम को आवाज देकर अपने पास में बुलाया। और कहा यह तुमने क्या कर दिया। एक पेट पालने वाले गरीब आदमी के साथ में बहुत बड़ा अन्याय कर दिया। अब कोई उपाय है तो कर। श्री गुमानीराम जी ने मुस्कराते हुए अपने बड़े भाई साहब अमराराम जी को कहा – मैनें कुछ नहीं किया। वह जादुगर जिंदा है। अपना सामान बटोर कर इक्कठा करकें अपने थेलों में डाल रहा हैं। श्री अमराराम जी ने भयंकर गुस्से में आकर कहा यह सब झूठ है। मैं स्वयं देखकर आया हूँ। श्री गुमानीराम जी ने कहा भाई जी आप मेरे साथ चलो। यथास्थिति देखकर बात करेंगे। जब दोनों भाई वहां गये। तो देखा तो जैसा गुमानीराम जी ने बोला वैंसा ही जादुगर अपना सामान बटोर कर अपने थेलों में डाल रहा था। श्री अमराराम जी को अफसोस हुआ कि मैं इस जादुगर को जमीन पर पड़ें हुये तड़फते हुये खुन बहते देखकर गया हूँ। बड़े भाई अमराराम जी ने अपने छोटे भाई श्री गुमानीराम जी के आंखो में आंखे डालकर एक टक देखने लगे। और सोचने लगे यह सब मेरे छोटे भाई की करामात है। जादूगर दोनों भाईयों को वहां खड़ा देखकर दौड़कर आया और उनके पैरों में गिर पड़ा। रोता – बिलखता हुआ बोला – बाबा मेरे से गलती हो गई। आप मुझे क्षमा करे। मैं कभी भी ऐसा नहीं करूंगा। आप मुझे जीवन – दान देते हुये आशीर्वाद दो ताकि मैं व मेरे बच्चों का पेट पालकर जीवन गुजारा कर सकूं। पूरे जीवन आपके नाम का गुणगान करूंगा। इस घटना का जिस भी जादुगर को पता लगेगा। कभी भी मैणासर गांव में नहीं आयेगा। अगर कोई भी जादुगर जब भी मैणासर गांव में आता है और उसको पता लग जाता है कि भूत काल में जादुगर के साथ ऐसा हुआ था। और जादुगर इस गांव से वादा करके गया था, तो वो जादुगर यहां से चला जाता है।

जादुगर ने वादा करके भी गुमानीराम जी महाराज के सामने नत मस्तक होकर कहा महाराज मेरा प्रणाम स्वीकार करों। मैं बिना अहम एवं सत्यता पूर्वक मेरी तंत्र विद्या से पेट पाल सकूं एवं मेरे परिवार का जीवन निर्वाह कर सकूं। ऐसा मुझे आशीर्वाद से गौरवाविंत व अभिभूत करके आपके नाम का स्मरण करते हुये मेरे जीवन के अंतिम क्षण तक प्रभु का भजन करते हुये जीवन व्यतीत कर सकूं। ऐसा सुनकर श्री गुमानीराम जी महाराज ने जादुगर के सिर पर हाथ रखकर अपनी अंतर – आत्मा से जादुगर को आशीर्वाद दिया एवं जादूगर को गांव मैणासर से रवाना कर दिया।

4. वर्तमान समय विज्ञान का युग है। आजकल लोग कई पुरानी बातों को पुरानी कथाओं को लोग नहीं मानते। लोगों की गलती नहीं है। जैसा युग है। जैसी हवा चलती है। उसके साथ ही चलना पड़ता है। लेकिन विज्ञान में ऐसा भी है कि प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। ऐसा ही श्री गुमानीराम जी महाराज को अंतरात्मा से याद करने वाला व इनका स्थान जहां पर मंदिर बने है। वहां पर जाने से प्रत्यक्ष पता लग जाता है। दुनिया में जितनी भी बातें व कहावतें चली है। वो कम रूप में होती है। पर होती जरूर है। हम लोग प्रचलित भाषा में कहते है। भूत – प्रेत – छाया आदि ये सब होते हैं। लेकिन हर जगह व हर आदमी या प्रत्येक समय में ऐसा कुछ नहीं होता । न कि प्रत्येक आदमी के साथ ऐसी घटनाऐं नहीं घटती। समय का व आदमी का मेल एक साथ मिलता हैं । तभी ऐसी घटनाऐं घटित होती है।

श्री गुमानीराम जी महाराज का जब देव – लोक का समय हो गया था। तब पूरा गांव इक्कठा था। तब उन्होनें कहा था कि गांव की जन्मी हुई व गांव में ब्याही हुई व प्रत्येक आदमी को वास्तव में भूत– प्रेत की छाव अगर पड़ गई हो तो या तो मेरे धुना की भगुंती से छाव दूर हो जाएगी। या मेरे नाम की रक्षा – सुत्र (तांती) बांध लेना। अगर छांव तात्रिंक हो तो मेरे स्थान (मंदिर) के पास आते ही छांव (भुत – प्रेत) दूर भाग जाएगा। यह मेरा आपसे वचन है। ऐसा आज इस युग में होता है। अगर किसी भी भाई को ऐसा हो गया हो तो पता लगा लेना।

इस प्रकार ग्राम मैणासर के श्री स्व. तिलोकाराम जी खीचड़ के साथ घटित हुई। जिसका मैं नीचे अति संक्षिप्त में विवरण कर रहा हूँ। स्व. श्री तिलोकाराम जी श्री गुमानीराम जी महाराज के पौत्र है। आज से करीबन चालीस, पैतालिस वर्ष पूर्व श्री तिलोकाराम जी रतनगढ़ से अपने ऊंट पर कुछ सामान लेकर गांव आ रहे थे। रतनगढ़ से कच्चे रास्ते होते हुए ऊंट पर चढ़े हुए आ रहे थे। रतनगढ़ से 1 किलोमीटर चलने के बाद लुंछ ओर रतनगढ़ के बीच में एक पुनानी धर्मशाला से डेढ़ सौ पांवडा रतनगढ़ की तरफ थोड़ा ऊंचा टीला है। ज्यों ही तिलोकाराम जी उस चढ़ाण से ढ़लाण की तरफ आए तब बाऐ हाथ की तरफ दोपहर के समय बिना किसी पेड़ की छांव भयंकर गर्मी में एक आदमी चादर ओढ़कर सोया हुआ था। श्री तिलोकाराम जी खीचड़ श्री गुमानीराम जी के बहुत ही बड़े सेवक थे। अतः निडरता पुर्वक ऊंट को रोककर उस सोये हुए आदमी से पुछा – भाई आप कौन हो। यहां चिल– चिलाती धुप एवं दोपहर के समय में चादर ओढ़कर क्यों सोये हुए हो। कोई तकलीफ हो तो मुझे बताओं। जितना मेरे से हो सकें तो जरूर सहायता करूंगा। लेकिन वो इंसान नहीं था। कोई प्रेत आत्मा थी। इनके कहने पर वो उठा और श्री तिलोकाराम जी की तरफ आता हुआ दिखाई दिया। पर चंद समय बाद में कुछ दिखाई नहीं दिया। श्री तिलोकाराम जी खीचड़ को अफसोस हुआ की यह क्या हुआ। फिर यह तिलोकाराम जी ऊंट पर चढ़े हुए अपने

घर आ गये। वो प्रेत छाया के रूप में उनके साथ ही घर पर आ गया। श्री तिलोकाराम जी खीचड़ श्री गुमानीराम जी का सेवक होने के नाते इनके नजदीक नहीं आ सका।

घर पर बाई कुनणी, श्री तिलोकाराम जी की लड़की जो कि सांगासर रिड़मल जी गोदार को ब्याही हुई थी। अपने यहां ग्राम मैणासर मायके आयी हुई थी। कुनणी दुसरे दिन सांगासर गयी। तब वह प्रेत उस बाई के साथ सांगासर चला गया। बाई कुनणी के घर के पास में एक छोटा सा श्री बालाजी महाराज का मंदिर बनाया हुआ था। वो मंदिर सुनसान रहता था। उसमें कभी भी कोई पूजा अर्चना नहीं हुई थी। वो सिर्फ नाम मात्र का स्थान था। वो प्रेत उसमें रहने लगा। बाई कुनणी ने मंगलवार का व्रत किया था। दोपहर का समय था। बाई ने सोचा उस मंदिर में भोग लगाकर एक समय भोजन करूंगी। बाई कुनणी भोग लेकर मंदिर के पास गई। अचानक मंदिर में एक इंसान जैसी छाया दिखाई दी। बाई कुनणी बगैर भोग लगाए वापिस घर आ गई। उसी समय घर आने के बाद में बहकने लगी व बेहोश हो गई। उल्टी– सुल्टी बाते करने लगी। घर वाले भी तंग हो गए। किसी ने रिड़मल जी को बुलाया कोई हकीम जंत्र–मंत्र–तंत्र जानने वाला लाओं। तभी ईलाज होगा। रिड़मल जी ने यहां मैणासर भी श्री तिलोकाराम जी व पुत्र मोहनाराम जी खीचड़ को समाचार भेजा। श्री मोहनाराम खीचड़ ने रिड़मल जी को कहा की कोई तांत्रिक/हकिम लाने की जरूरत नहीं है। मैं श्री गुमानीराम जी (दादोजी) महाराज के धुन्ना की भंगुती ला रहा हूँ। श्री मोहनाराम खीचड़ ने श्री दादोजी की भंगुती ले जाकर बाई के ऊपर डाली। भंगुती डालते ही बाई जोर – जोर से चिल्लाने लगी। ओ बाई नहीं, बाई के रूप में प्रेत आत्मा ही चिला रही थी।

बाई को ऊंट गाड़ी जोड़कर गाड़ी में बैठाकर मैणासर आने लगे बाई जोर – जोर से चिल्ला रहीं थी। आप कहां जा रहे हो। मैणासर नहीं जाउंगी। वो प्रेत आत्मा ही चिल्ला रहीं थी। ज्यों ही भींचरी गांव निकलने के बाद में मैणासर गांव के खेतों की कांकड़ के पास आए। तब उस प्रेत आत्मा को श्री गुमानीराम जी कांकड़ पर दिखाई दिए। और वो जोर से बाई की आवाज में चिल्लाया। अब मुझे छोड़ दो। मैं कभी भी बाई को तंग नहीं करूंगा। मुझे माफ कर दो। मैं मेरे गंतव्य स्थान पर चला जाऊंगा। श्री गुमानीराम जी महाराज उस प्रेत आत्मा के सिवा किसी को भी नहीं दिखाई नहीं दिये। उस प्रेत आत्मा को माफ कर दिया व बाई कुनणी चुन–चुाप आराम से गाड़ी में बैठी हुई श्री गुमानीराम जी के मंदिर में आई धोक लगाई। और वापिस अपने ससुराल आराम से चली गयी। उसके बाद में बाई को कभी कुछ भी दिखाई नहीं दिया। आराम से अपना जीवन व्यतीत करने लग गये। फिर बाई कुनणी ने श्री गुमानीराम जी के मंदिर में एक चांदी का छत्तर (500 ग्राम लगभग) चढ़ाया। वो छत्तर आज भी मंदिर में स्थित है।

5. कहा जाता है कि बीमार इंसान जो डॉक्टरो से ठीक नहीं होता। अगर उसका जीवन लम्बा है। अगर देवता और भगवान की नजर पड़ जाये। तो कई बार जांचों के बाद में कुछ नहीं आता। डॉक्टर को भगवान के सामने नत–मस्त्क होकर ऊपर हाथ खड़ा करके कहना पड़ता है कि उसके सामने हम कुछ नहीं। उसकी लीला अलग है।

ऐसा ही एक वाक्या मैणासर गांव में सन् 2013 में श्री रामचंद्र जोशी के साथ हुआ। रामचंद्र जोशी को पहले चर्म रोग हुआ। जिसकी फतेहपुर, बिकानेर, जयपुर कई जगह डॉक्टरों को दिखाकर दवाई ली। मगर बीमारी कम होने के बजाय कई बीमारियों से ग्रस्त हो गया। दवाई ज्यादा लेने से गुर्दे पर भी बहुत ज्यादा असर पड़ गया। हालात ऐसा हो गया बचना तो दुर मरना नजदीक प्रतीत होने लगा। जिंदा करने वाला व बीमारी ठीक करने वाला सिर्फ भगवान होता है। मगर इंसान चाहे वो कितना भी गरीब हो फिर भी ईलाज करानें की कोशिश करता है। ऐसा ही रामचंद्र जोशी के साथ हुआ। घर वालों ने सोचा सब जगह दिखा लिया। किसी ने बताया कि एक बार जयपुर दुर्लभजी अस्पताल में जरूर दिखाओं। रामचंद्र जोशी की धर्मपत्नि ने श्री गुमानीराम जी (दादोजी) की शरण में आकर संकल्प लिया। कि मैं अब आपकी देख–रेख में ही जयपुर भिजवा रही हुँ। आपके सिवा मेरा कोई नहीं है। दवाई और ईलाज सिर्फ दिखावा होगा। आपको ही मेरे पतिदेव की रक्षा करनी पड़ेगी। मैं सिर्फ आपका नाम लेकर ही जयपुर भिजवा नही हुँ।

रामचंद्र जोशी को जयपुर दुर्लभजी में भर्ती करवा दिया गया। 16 दिन हो गए कोई दवाई नहीं लगी। दिन पर दिन शरीर सिकुड़ने लगा। अब बचना बहुत मुश्किल होने लगा। घरवालों को महशुश होने लगा। अब बचना बहुत मुश्किल है। मगर कहते हैं कि विधि का विधान अलब होता है। रामचंद्र जोशी की धर्मपत्नि श्री गुमानीराम जी के शरण में थी। उसको यह आत्मविश्वास था कि मेरा पति श्री गुमानीराम जी की दया दृष्टि से जरूर ठीक होकर घर आएगें। एक कहावत प्रचलित है। आत्मा सो परमात्मा। यानी जिसकी आत्मा के भाव व भावना अच्छी हो उसको भगवान भी सहारा देता है। इसलिए आत्मा के भाव कभी गलत नहीं रखना चाहिए। रामचंद्र जोशी को भर्ती किए हुए 16 दिन हो गए थे। रात को नींद में श्री गुमानीराम जी महाराज के दर्शन हुए एवं कहा कि तेरे घर पर फोन यानी सुचना करवा दे कि जब तक मैं घर नहीं आऊँ। श्री गुमानीराम जी महाराज (दादोजी) के नाम की अखण्ड ज्योति जलाते रखना। उसकी धर्मपत्नि ने ऐसा ही किया। भर्ती किये हुए 18वें दिन जांच में पाया कि रामचंद्र जोशी को कोई भी बिमारी नहीं है। और डॉक्टरों ने छुट्टी दे दी कि अब आप स्वस्थ हो और घर चलें जावों। हसता – खेलता घर आया और आज रामचंद्र जोशी बिल्कुल स्वस्थ हैं। कोई बिमारी नहीं है।

इस प्रकार श्री गुमानीराम जी महाराज ने रामचंद्र को जीवन दान दिया। इनकी महिमा अपरमपार है।

6. यह मरूधर प्रदेश अनेक लोक देवी– देवताओं और संत महात्माओं की पुण्य भूमि रहा है। ऐसी ही एक प्रसिद्ध कथा शेखावाटी आंचल के रतनगढ़ तहसील के गांव मैणासर के जाट (खीचड़) वंश में अवतरित श्री श्री 1008 ब्रहमनिष्ठ योगीराज संत श्री गुमानीराम जी (दादोजी) महाराज की है। इनके अनके पर्चे है। हमें जितना ज्ञात है। उन्हीं पर्चों में से यह एक महत्वपूर्ण पर्चा प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मैणासर खीचड़ परिवार में से श्री गुमानीराम जी महाराज के पड़पोत्र श्री रूड़ाराम पुत्र श्री कालूराम खीचड़ की धर्मपत्नि सोहनी देवी के सन् 2000 में एक पुत्री पैदा हुई, जिसका नाम संतोष रखा गया।

राजस्थान में एक परंम्परा है कि महिला के प्रसव होने से एक महीनें तक प्रसव की पीड़ा व महिला का वापिस सुडौल शरीर बनाने के लिए जच्चा व बच्चा दोनों को घर के कमरें के अंदर ही रखा जाता है। एवं देशी गाय – भैंस के घी के साथ गुंद एवं सूंठ का खाना खिलाया जाता हैं। सोहनी देवी के प्रसव के समय श्री रूड़ाराम के घर में देशी घी का अभाव होने के नाते किसी दुसरे के घर से देशी घी लाया गया। देशी घी हमेशा विश्वास पात्र व्यक्ति से लिया जाता है। मगर जो रूड़ाराम जी लाया उसमें किसी दुसरे घी (डालडा) की मिलावट थी। अतः थोड़े दिन में वो घी खाने के बाद तबियत बिगड़ने लगी। धीरे – धीरे इतनी कमजोर हो गई कि शरीर एकदम सिकुड़ने लगा। घरवालों ने कई डॉक्टरों एवं अस्पतालों में दिखाया व ईलाज करवाया।

अंततः ख्याति प्राप्त बीकानेर अस्पताल में ईलाज चल रहा था। तब डॉक्टरों ने कहा बच्ची का शरीर भी अच्छा होने के बजाय सिकुड़ रहा है। अतः मॉ का दुध बंद कर दो। बच्ची को मॉ का दुध पिलाना बंद कर दिया। लम्बे अर्से तक ईलाज चला। आखिरकार लगभग 4 वर्ष बाद डॉक्टरों ने कहा इनके दोनों गुर्दो ने काम करना बंद कर दिया है और शरीर में रक्त का पानी बन रहा है। अतः बीकानेर के डॉक्टरों ने कहा अब इनका ऑपरेशन के सिवाय कोई बचाव नहीं है। अतः आपको जयपुर रैफर किया जाता है। आप वहां जाकर ऑपरेशन करवा लो। इसके सिवाय कोई बचाव का रास्ता नहीं है।

डॉक्टरों ने कहा कि ऑपरेशन के लिए 1 लाख 20 हजार रूपये पहले जमा करानें होंगे। उसके बाद भी हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं कि यह बच जाये या न बचें यह इनके व आपके भाग्य पर निर्भर है। अतः सोहनी देवी ने कहा कि एक बार ऑपरेशन नहीं करवायेंगें कुछ दवाईयाँ लेलों और घर चलों। घरवालों ने ऐसा ही किया। कुछ दिनों की दवाई लेकर घर आ गए।

अब यह बात सुनकर गांव के लोग स्तब्ध रह गये थे। क्योंकि दीपक की इस लौं में आशा की कोई उम्मीद नहीं थी। इंसान के गुर्दे जब काम करना बंद कर देते हैं तो या तो किसी दुसरे इंसान के गुर्दे ऑपरेशन द्वारा डलवाये जायें या ऐसी दवाई लग जाये जिससे काम करना शुरू कर दें। उस विकट घड़ी के दौरान रात के समय में सोहनी देवी जब नींद में सो रही थी। तब स्वप्न रूप में श्री गुमानीराम जी महाराज के दर्शन हुए। तथा स्वप्न में ही उन्होंने बोलकर कहा कि ऑपरेशन मत करवाना। सफलता नहीं मिलेगी।

अतः तुम मेरा स्मरण करते हुए मेरे नाम का बनाया हुआ स्थान (मंदिर) में हमेशा जाना शुरू कर दो। सब ठीक हो जाएगा। अचानक सोहनी देवी की आंखे खुली तो अचम्भा हुआ और श्री गुमानीराम जी (दादोजी) महाराज के नाम का स्मरण करते हुए सारी दवाईयाँ घर के बाहर फेंक दी। और श्री गुमानीराम जी के मंदिर की तरफ चल पड़ी। मंदिर में जाकर मूर्ति का दर्शन करके सारा कष्ट मिटाने की प्रार्थना की। श्रद्धा बढ़ती गई और धीरे – धीरे कष्ट मिटता गया।

यदि विश्वास हो तो पत्थर की मूर्ति भी बोलने लग जाती है। कहते है चमत्कार है तो नमस्कार है। जगत झुकावें शीश, बिना मतलब कोई माने नहीं चाहे घर आए जगदीश।

आज सोहनी देवी को श्री गुमानीराम जी की कृपा से न कोई गुर्दो में बीमारी है। न कोई और बीमारी है। श्री गुमानीराम जी के मंदिर में उनकी मूर्ति के दर्शनों के लिए घर में चाहे कितना भी काम हो एक बार जरूर जाती है। इसी प्रकार सोहनी देवी के दो पुत्र रामदेव व गोविंद को भी कई बीमारियाँ हो गई थी। उनको भी जीवन दान दिया।

इसी प्रकार श्री गुमानीराम जी के बहुत सारे पर्चे हैं। सभी पर्चो का व्याख्यान करना बहुत मुश्किल है।

मेरी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि कोई त्रुटि हो या कोई शब्द भूलवंश रह गया हो तो क्षमा प्रार्थी हूँ। मैं अब इनकी जीवनी व पर्चे आदि का यहीं पर विराम देता हूँ।

–: जय श्री दादोजी महाराज :–

श्री श्री 1008 श्री ब्रह्मनिष्ठयोगीराज संतश्री गुमानीराम जी महाराज की आरती

ओम् जय श्री दादोजी महाराज हरे,
जय संत श्री गुमानीराम जी हरे ।

भक्त जनों के संकट पल में,
श्री दादोजी महाराज दूर करे।

जो कोई संत गुरू के मंदिर में आवे,
वह मनवांछित फल पावे।

ओम् जय श्री दादोजी महाराज हरे,
जय संत श्री गुमानीराम जी हरे।

ऊँचे – ऊँचे धोरा पर बण्यो थारो मंदिर,
शोभा लागे अति भारी।

जो संत गुरू के चरणों में शीश नमाये,
वह सुख – संपति पावे।

ओम् जय श्री दादोजी महाराज हरे,
जय संत श्री गुमानीराम जी हरे।

खेड़ी खामणिया में बकरी चरावता,
मिल्या श्री भगवान जी।

दुर – दुर से आवे नर और नारी,
वैशाख दशमी को मेला लागे अति भारी।

ओम् जय श्री दादोजी महाराज हरे,
जय संत श्री गुमानीराम जी हरे।

खीर – चुरमा का भोग लागत और,
चढ़ चोटिया रा नारियल जी।

श्री गुमानीराम जी की आरती जो कोई नर नारी गावे।
कहत मैणासर सेवक जन अति आंनद फल पावे।

ओम् जय श्री दादोजी महाराज हरे,
जय संत श्री गुमानीराम जी हरे ।

—::जय श्री दादोजी महाराज की जय ::—